SM15-2-4 HI

बुद्धिमत्ता की डिजाइन की केस - प्रोग्राम 4

अनाऊंसर: आज द जॉन एन्करबर्ग शो में, हम कहाँ से आए हैं? हम यहाँ कैसे पहुंचे हैं? किसने हमें अस्तित्व में लाया है?

ज्यादातर स्कुल और कॉलेज में चार्ल्स डारविन का उत्पत्ति का सिद्धान्त विज्ञान के स्थापित सत्य के रूप में बताया जाता है, किसी थेयरी से बढ़कर/ लेकिन आज बहुत से माने हुए वैज्ञानिक जो इस लेख को देखते हैं वो डारविन की थेयरी का इनकार करते हैं, बहुत से कारणों से/ उन में से एक सबसे महत्वपूर्ण है जानवरों का कैमरियन एक्सप्लोजन, जो बेचीदा है, पूरी तरह से बने हुए जानवर अचानक फोसील रिकार्ड्स में आते हैं, इसके पहले कोई जवाब नही था, कि कुछ वैज्ञानिक क्यों विश्वास करते हैं, कि ये जानवर सहमत करनेवाले सबूत देते हैं, जीवन के इतिहास में सर्वसामर्थी के आकर देने की बुद्धी का/

आज मेरे मेहमान हैं डॉक्टर स्टीवन मायर,इन्होने फिलोसोफी ऑफ़ साइंस में पी एच दी पाई है, केमब्रिज यूनिवर्सिटी से, और ये लेखक हैं बेस्ट सेलिंग बुक डारविनस डाउट के/ हम आपको जुड़ने का न्योता देते हैं/

****

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: प्रोग्राम में स्वागत है, मैं हूँ जॉन एन्करबर्ग, मेरे साथ जुड़ने के लिए धन्यवाद, हमारा विषय है, आज क्यों बहुत से वैज्ञानिक टेक्स बूक के स्थिर उत्पती के सिद्धान्त का इनकार क्यों करते हैं, जिसे नीओ-डारविनइज़म नाम से जाना जाता है/ जो हम ने हाय स्कुल और कॉलेज के टेक्स्ट बुक में पढ़ा और कहाँ से कंटेम्पररी इवोल्यूशन थेयरी शुरू होती है? पिछले कुछ हफ्तों से हम उत्पत्ती के सिद्धान्त के बारे में देख रहे हैं और उसका सामना करने के लिए वैज्ञानिक समस्याएँ क्या हैं, वैज्ञानिक और फिलोसोफर स्टीफन मायर के साथ, डॉक्टर मायर पहले के जियो-फिजिसिस्टहैं जिन्होंने अपनी पी एच डी फिलोसोफी ऑफ़ साइंस में पाई है, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी से, इन्होने दो बेस्ट सेलिंग बुक्स लिखी हैं सिगनिचर इन द और डारविनस डाउट/

डॉक्टर मायर हम खुश है कि आप यहाँ हैं और ये आपकी सुंदर किताब हैं, डारविन्स डाउट. इस किताब का मुख्य मुद्दा क्या है, जरा बताइए?

डॉक्टर स्टीफन मायर:: जी, इस किताब में मैंने उस संदेह के बारे में बताया था जो डारविन ने किया था अपनी ही थेयरी के पूरे न होने परऔर उनका संदेह जिन्दगी के इतिहास के बारे में था, जो कैमरीयन एक्सप्लोजन है, हम इसके बारे में पिछले एपिसोड में चर्चा की थी, कैमरीयन एक्सप्लोजन तो जिन्दगी के

इतिहास में ऐसी घटना है, जिसमें पहली बार जानवरों के बेचीदा फॉर्म्स अचानक ही फोसिल्स रिकार्ड्स में आते हैं, जिसे डारविन ने जाना और इसने उनके जिन्दगी के इतिहास को चुनौती दी, क्योंकि वो सोचते थे कि जिन्दगी, बेचीदा जिन्दगी धीरे धीरे एक लंबी क्रिया और थोड़े थोड़े इन्क्रीमेंटल वेरिएशन में समय के अनुसार होता है/ लेकिन इसके बजाए हम देखते हैं कि इस तरह के जिन्दगी के फॉर्म्स अचानक प्रकट होते हैं/

इस किताब में मैंने दो भेद के बारे में बताया है/ पहला भेद तो मिसिंग एनसेस्ट्रल फोसिल्स का है/ जिसके बारे में डारविन ने सोचा कि ये वहां है, नियमित बदलाव की क्रिया के कारण. लेकिन ये तो मिसिंग हैं, और फिर मैंने गहरे भेद के बारे में बताया, यही तो भेद है कि कैसे इस एवोल्यूशनरी प्रोसेस ने इन जानवरों को बनाया/ और ये भेद जो मैंने बताया है ये बहुत सटीक है, क्योंकि हम जानकारी के महत्व के बारे में सिख रहे हैं, खास जेनेटिक जानकारी जो नए तरह के जानवरों को बनाने के लिए जरूरी हैं/

इस किताब में बढनेवाली बहस भी है और कहानी भी है, और ये बहस ये ही कि बुद्धिमत्ता की डिज़ाइन की थेयरी, ये अच्छा विवरण देती है, कैमरीयन जानवर बनाने के लिए जरूरी जानकारी देती है, आज के किसी भी मटेरियलिस्टिक इवोल्यूशनरी थेयरी या मॉडल्स से ज्यादा/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: और मैं कहूँगा कि इस किताब ने एक कहानी बनाई है, लोगों के समाने, ठीक हैं, तो साइंटिफिक दोष निकालनेवालों का क्या प्रतिउत्तर रहा है?

डॉक्टर स्टीफन मायर:: जी, खैर कुछ लोग तो चौक गए हैं, सच में, किताब का एक बड़ा रिव्यू हुआ, इस किताब के रिलीज़ होने के डेढ़ महीने पहले किया गया/ एक इवोल्यूशनरी बायोलॉजिस्ट द्वारा यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो से, नाम है जेरी कॉयनी/ उन्होंने दावा किया कि बेबी यीशु ने जानवरों का फायला बनाया है, जिस पर मैंने सच में बहस नही की थी/ और फिर एक रिव्यू रिलीज़ किया गया था, सुबह के समय में, पहले दिन जब ये किताब खरीदने के लिए उपलब्ध थी/ ये 9400 शब्दों का ये रिव्यू था जिसे पीलीएन्टोलोजी ग्रैड स्टूडेंट की ओर से, जो यूनिवर्सिटी ऑफ़ बर्कली से थे, और ये स्पष्ट था कि ये ग्रैड स्टूडेंट इस बात के बारे में विवाद कर रहा था जो शायद मैंने कहा होगा, जो शायद मैंने इसके के आर्टिकल में कहा होगा, लेकिन उसने ये किताब नही पढ़ी होगी, लेकिन बाद में एक रिव्यू पब्लिश किया गया न्यू योर्कर में, जो इस ग्रैड स्टूडेंट के बुक असेसमेंट पर आधारीट था जो उसने पहले पढ़ा नही था, याने बहुत से रिव्यू थे जिसे हम अजीब से कह सकते हैं वो पहले से थे/ और जी कहिए/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, और मैं कहूँगा, चलिए कुछ को देखते हैं, आपकी किताब में,आपकी किताब में आपने दिखाया कि नियो-डारविनिजम बायोलॉजिकल जानकारी की शुरुवात के बारे में नही बता सकता है, लेकिन कुछ लोग कहते हैं कि क्यादुसरी इवोल्यूशनरी थेयरी ऐसा नही करती है?

डॉक्टर स्टीफन मायर:: जी, और भी थेयरी हैं, नियो-डारविनिजम के परे, और एक बात जो मैने किताब में दिखाया है चैप्टर 15 और 16 में, ये दूसरी थेयरी कई केस में बेहतर हैं, नियो-डारविनिजम से, लेकिन ये भी जानकारी की शुरवात बताने में असफल होते हैं, उदाहरण के लिए एक अद्भुत नई इवोल्यूशनरी थेयरी है जिसे नैचरल जेनेटिक इंजीनियरिंग के नाम से जाना जाता है, जो एक बहुत ही बड़े बायोलॉजिस्ट ने बनाई है यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो से/ नाम है जेम्स शीपेरो, जिनका मैं बहुत आदर करता हूँ, शिपेरो ने बताया कि म्युटेशन जिस पर डारविन आधारित थे, कि बायोलॉजिकल बदलाव का लेखा रखे, ये तो अपने आप में रैंडम नही हैं, लेकिन इस के बजाए वो अलगरीदमिक कंट्रोल में होते हैं, ये तो प्री-प्रोग्राम अड़ेपटिव कैपसिटी होती है ऑर्गनजिम्स की जिसके कारण वो अलग तरह के वातावरण को प्रतिउत्तर देते हैं, और मैं सोचता हूँ कि ये अद्भुत है और मैं सोचता हूँ कि उन्होंने बहुत अच्छी केस बनाई कि इस तरह के डायरेक्टेड म्युटेशन प्रतिउत्तर देते हैं

अलग तरह के वातावरण की चुनौतियों को, लेकिन जिस सवाल का शीपेरो ने जवाब देने की कोशीश की, ये सवाल तो उस प्री-प्रोग्रामिंग के शुरू का सवाल है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, वो कहाँ से आया है?

डॉक्टर स्टीफन मायर:: वो कहाँ से आया है और भी फिर से जानकारी का सवाल है, तो मैनें अपनी किताब के बाद के चैप्टर में बताया कि हाँ इवोल्यूशनरी थेयरी के नए मॉडल्स हैं, जो ऐसी बातें लेते हैं कि नियो-डारविनिज मर चूका है/ टेक्स्ट बुक की थेयरी को अब ज्यादातर मुख्य बायोलॉजिस्ट खुद स्वीकार नही करते हैं, वो आगे बढकर नए मैकनीजम बनाने कि कोशीश कर रहे हैं कि ओरिजिन के बारे में नए रूप और जानकारी को बता सके/ लेकिन मैंने ये भी बताया कि ये नई थेयरिज़, एक तो उस सवाल का जवाब नही देती है, बायोलॉजिकल जानकारी के मुख्य सवाल का/ और यदि वो कुछ करे तो भी वो केवल जानकारी के विवरण न दिए गए स्रोतबताते हैं, इस तरह वो सवाल का जवाब दिए बिना ही रह जाते हैं/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, ऐसे दिखता है कि कि इंटों की दीवारे थे शुरू में, और फिर अंत में, उन्हें पता नही था कि जानकारी कैसे ले, एक बार जानकारी पाने के बाद इससे ज्यादा गडबडी नही कर सकते हैं/

डॉक्टर स्टीफन मायर:: जी, हमने पाया कि ये भी बात सही है, जैसे पिछले सेगमेंट में हमने चर्चा शुरू कि थी कि इस में समस्या ये है, डेवलपमेंटल जीन रेगुलेटरी नेटवर्क में, कैसे ये जीन का नेटवर्क पूरी तरह से ये जानकारी उलझी हुई थी कि जानवरों को बनाए, और सही तरह से जानवरों के बॉडी प्लान को बनाए, फिर भी डेवलपमेंट की क्रिया को इस नेटवर्क को खत्म किए बिना हम कुछ नही कर सकते हैं/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, हम यहाँ आपकी किताब के दोषनिकालनेवाले के बारे में कह रहे हैं, लेकिन एक पीलीएनटोलोजिस्ट ने कुछ सलाह दी थी, एक हल या थेयरी दी थी/

डॉक्टर स्टीफन मायर:: इस किताब का मुख्य विषय था वो जानकारी पाना जो जानवर की शुरुवात को बनाने के लिए जरूरी थी/ और अंत में सितंबर 2013 में, जिस साल ये किताब रिलीज़ हुई,एक रिव्यू आया, जिसमे उन्होंने बताने की कोशीश की इस मुख्य मुद्दे पर/ और ये रिव्यू साइंस में पब्लिश हुआ था/ जिसे लिखा था अमेरिका एक बड़े साइंस जरनल ने,और इसे चार्ल्स मार्शल ने लिखा था/ ये मुख्य इवोल्यूशनरी बायोलॉजिस्ट और पीलीएनटोलोजिस्ट हैं यूनिवर्सिटी ऑफ़ केलिफोर्निया ऑफ़ बर्कले के/ और मार्शल का रिव्यू बेचीदा था/ और मैं सोचता हूँ कि आदरणीय है, ये एक तरह से आदरणीय है कि मैंने चैन पाया/ उन्होंने किताब के मुख्य विवाद के बारे में बताने की कोशीश की/ उन्होंने कहा कि देखिए मायर की केस इस दावे पर आधारित है कि नए जानवरों के बॉडी प्लान की शुरुवात के लिए बहुत ज्यादा नावेल जेनेटिक जानकारी की जरूरत है/ सच में अब हम यही समझते हैं, मोरफोजेनेसिस के लिए हमारी अभी की समझ यही है, जिसका अर्थ बॉडी प्लान बिल्डिंग से है/ ये दिखाता है कि नए जानवरों के फायला नए जींस से नही बने, लेकिन ज्यादातर बने हैं जीन रेगुलेटरी नेटवर्क के रिवयरिंग से/ पहले से अस्तित्व रहनेवाले जींस से/

डॉक्टर स्टीफन मायर:: अब ये सच में दिलचस्प भाग हैं, क्योंकि वो मेरी बात को दूर करने की कोशीश कर रहे थे जो मैं बुद्धिमत्ता की डिजाईन की जरूरत के बारे में कह रहा था कि जानकारी की शुरवात के बारे में बता सके, लेकिन ये सच में जानकारी की शुरवात को नही बताता है/ वो अनुमान लगते हैं, पहले से अस्तित्व रखनेवाली जानकारी के बारे में/

नंबर एक वो पहले से अनुमान लगते हैं,जीन रेगुलेटरी नेटवर्क के बारे में, जिसके बारे में हमने पिछले एपिसोड में देखा है, ये तो इन्टरएक्टिंग जींस का नेटवर्क है, और इनके प्रोटीन प्रोडक्ट्स का, जी, हर जीन में जेनेटिक

जानकारी होती है/ साथ ही हम जानते हैं कि ये जीन रेगुलेटरी नेटवर्क पहले से अस्तित्व रखनेवाले जींस पर काम करते हैं, कि कुछ को शुरू करे, और बंद करे, समय समय पर, तो ये एक और स्रोत है/ पहले से अस्तिव रखनेवाली जेनेटिक जानकारी के लिए/ और तीसरी बात, रेगुलेटरी जेनेटिक नेटवर्क को रिवयरिंग के लिए कोड के बदलाव की जरूरत है/ जानकारी का ज्यादा इनपुट और इन तीनों केस में, मार्शल ने नही बताया कि ये जानकारी कहाँ से आती हैं, वो बस इसका पहले से अनुमान लगाते हैं/

तो मैं नही सोचता कि हमें बायोलॉजी में पी एच डी की जरूरत नही कि ये देखे कि मेरे मुद्दों को उन्होंने दूर करने की कोशीश की है/ लेकिन ये सच में सवाल उठाता है, वो केवल जानकारी की शुरुवात की समस्या का थोडा पीछे ले जाते हैं और कहते हैं, ये पहले से अस्तित्व रखनेवाली जानकारी है जो बताती है कि जानवर किस तरह से बने थे/

और इन सब के साथ उन्होंने सुझाव दिया कि, इवोल्यूशनरी प्रोसेस जीन रेगुलेटरी नेटवर्क को रीवायर कर सकती है, जैसे हमने पिछले एपिसोड में चर्चा की थी, एक बात जो हम अनुभव से जानते हैं, कि हम इस जिन्स के नेटवर्क को बदलकर अपेक्षा नही कर सकते हैं कि जानवर सही तरह से बढ़ते जाए/ लेकिन यदि हम जिन्स के इस नेटवर्क को बदलते हैं, तो वो मर जाएगे, और ये संभव सलाह नही है, जो हमने प्रोयोग से अच्छे से जान ली है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, मैं ये भी कहूँगा कि बहुत से वैज्ञानिक हैं जिन्होंने इस किताब के बारे में सकारात्मक वाक्य कहे हैं, मतलब मैंने एक प्रोफेसर का लेख पढ़ा, जो जर्मनी के यूनिवर्सिटी या इंस्टीट्यूट से है, उन्होंने कहा कि ये साइंटिफिक लिटरेचर को बहुत ही सटीक, समझनेवाला रिव्यू है, पिछले 40 साल में, मतलब इससे आपको कैसे लगा?

डॉक्टर स्टीफन मायर:: जी, इस किताब के बारे में लोगों जो सराहना की है उससे मैं बहुत खुश हूँ, हार्वर्ड के जेनेटिक के प्रोफेसर हैं, मुख्य कैमरीयन पीलीएनटोलोजिस्ट, जिन्होंने किताब पब्लिश की है कैमरीयन एक्सप्लोजन पर, कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस से, प्रोफेसर लीनिंग मैक्स प्लान्क इंस्टीट्यूट जर्मनी से, जी, दोष निकालनेवालों के साथ हमारे पास सपोर्टर्स भी हैं/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, चलिए और कुछ दूसरे सवालों को देखते हैं, जो हम सुनते हैं, कईबार विख्यात प्रेस से, और वो कहते हैं कि बुद्धिमत्ता की डिजाईन विज्ञान नही है/

डॉक्टर स्टीफन मायर:: ये बहुत दिलचस्प विवाद है, क्योंकि हम विचार के बारे में यही जानना चाहते हैं कि ये सही है या गलत है, हम उसका विभाजन नही जानना चाहते हैं, ठीक है, तो हम कहते हैं कि मजबूत सबूत है कि बुद्धिमत्ता की डिजाईन ने जिन्दगी के इतिहास में काम किया है, तो कोई वापस आकर कहता है, ये विज्ञान नही है, ये अजीब प्रतिउत्तर है, लेकिन वो ये कहना चाहते हैं, नही, ये सच नही है/ सबूत दूसरी दिशा को दिखाते हैं/

और असली दावों पर विवाद करने के बजाए, जी ये झूठ है, हम कहेगे कि नही ये विज्ञान नही है, ये आस्था है या ये फिलोसोफी है, या ये सूडो-साइंस है या और कुछ है/ और और मैं इस विवाद पर पहले यही कहूँगा, कि ये मुद्दे पर नही है, हम जानना चाहते हैं कि ये सही है या नही/

अब मैं ये भी कहूँगा कि बहुतसे अच्छे कारण है कि बुद्धिमत्ता की डिजाईन को साइंटिफिक थेयरी के रूप में न लेने के लिए/ जैसे हमने पिछले एपिसोड में चर्चा की है, बुद्धिमत्ता की डिजाईन की केस बनाने के लिए, मैंने जानबुझकर साइंटिफिक रीजनिंग के इसी तरीके का उपयोग किया/ जो चार्ल्स डारविन ने ओरिजिन ऑफ़ स्पीशीज में उपयोग की थी, याने यदि हम ये कहते हैं कि बुद्धिमत्ता की डिजाईन साइंटिफिक नही है, तो ये भी

कहना होगा कि डारविन की थेयरी इवोल्यूशन बाय नैचरल सिलेक्शन भी, जिसमें वो ऐतिहासिक साइंटिफिक तरीके का उपयोग करते हैं, ये भी साइंटिफिक नही है, तो मैं नही सोचता कि इसे अनसाइंटिफिक रूप में अलग करने से कुछ होगा, लेकिन ये अजीबसा दावा है, लेकिन मुद्दा है कि बुद्धिमत्ता की डिजाईन सही है या नही, मैं सोचता हूँ कि हमने अच्छी केस बनाकर बताया है कि ये विश्वास करने के अच्छे कारण है ये हमें अच्छा विवरण दे रही हैं और ये सही भी हैं/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, पिछले हफ्ते हमने जो कहा था उसके बारे में लोगों को बताइए/ कुछ लोगों ने नही देखा होगा डारविन के मेंटर चार्ल्स लायाल के बारे में और ये ऐतिहासिक साइंटिफिक थेयरी क्यों है?

डॉक्टर स्टीफन मायर:: ठीक है, बुद्धिमत्ता की डिजाईन की थेयरी और डारविन की थेयरी, या मटेरियलिस्टिक इवोल्यूशनरी थेयरी सब एक ही सवाल का जवाब देने की कोशीश करते हैं, ये बेचीदा जानवर कैसे आए, जिन्दगी के इतिहास में, किस कारण वो अस्तित्व में आएं? ये दोनों में हैं/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: भूतकाल में/

डॉक्टर स्टीफन मायर:: भूतकाल में, बहुत भूतकाल में, दोनों थेयरी बताते हैं भूतकाल में बीती हुई घटनाए, और बुद्धिमत्ता की डिजाईन, बुद्धिमत्ता की डिजाईन की थेयरी, जानकारी देती है, बताती है, एक एक बुद्धिमत्ता का कारण है, जिसने भूमिका निभाई कि जो जानकारी चाहिए थी इस तरह के जानवरों को बनाने के लिए वो दे सके/ नियो-डारविनिजम और दुसरे मटेरियलीस्टिक थेयरी इसका उल्टा ही कहते हैं, ये थेयरी बताते हैं कि अनडायरेक्टेड मटेरियल प्रोसेस, बनाते हैं इस तरह की जानकारी जो हम भूतकाल के इतिहास में देखते हैं/ ये दो विरोधी विवरण हैं, एक ही फिनोमीना के/ एक साइंटिफिक है और दूसरा धार्मिक, या एक फिलोसोफीकल और दूसरा सूडो-साइंस या ऐसा कुछ, ये दो तरह की बातें नही हैं, ये एक ही सवाल के दो अलग जवाब हैं/ एक साइंटिफिक है और दूसरा भी साइंटिफिक है/ लेकिन इसके विरोध में साइंटिफिक विवरण देता है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, और लोगों को ये समझाना बहुत जरूरी है, चलिए देखते हैं कि क्या बुद्धिमत्ता की डिजाईन टेस्टेबल थेयरी नही है? मैं सोचता हूँ और सोचता हूँ कि ये सही नही है/ क्योंकि हम इसे हर तरह से जांच रहे हैं/

डॉक्टर स्टीफन मायर:: जी, ये सही है, एक कारण है जिससे लोग कहते हैं कि बुद्धिमत्ता की डिजाईन विज्ञान नही है क्योंकि ये टेस्टेबल नही है,लेकिन वो जांचने के बारे में बहुत ही सक्रे विचार रखते हैं, जिसका अर्थ है कि उसे हम लेबोरेटरी में नियन्त्रण में जांच ले, लेबोरेटरी कंडिशन में, लेकिन ऐतिहासिक साइंटिफिक थेयरीज़ को हम इस तरह से नही जांचते हैं, ऐतिहासिक साइंटिफिक थेयरी कारण का तरीका उपयोग करती है जिसे मल्टीपल कोम्पिटिंग हायपोथसेस कहते हैं, जहाँ वैज्ञानिक बहुत से संभव विवरण देखते हैं, भूतकाल की किसी घटना के बारे में, और फिर वो उन हायपोथसेस की सच्चाई को जांचते हैं, वर्तमान में हमारे कारण और प्रभाव के ज्ञान में/

और बुद्धिमत्ता की डिजाईन की थेयरी बिलकुल यही करती है/ ये बताती है कि इंटेलीजेंट एजेंट जानकारी को देने के लिए काम करते हैं, और भूतकाल में हुई जानकारी के शुरू के बारे में बताती हैं/ फिर उस विचार को जांचती है हमारे कारण और प्रभाव के ज्ञान में, और ये दिखाते हैं कि केवल एक ही कारण है, कि हमारे वर्तमान के अनुभव में ये जानकारी की शुरुवात है/ इसे बुद्धिमत्ता कारण है/ याने बुद्धिमत्ता की डिजाईन मुख्य टेस्ट को पूरा करती है, जिसे पर्याप्त होना कहते हैं, ये वो कारण बताती है जिसके कारण वो सवाल के प्रभाव हुए हैं/

और दूसरे तरीके से भी हम ऐतिहासिक साइंटिफिक थेयरी को जाँच सकते हैं, और मैंने अपनी किताब में बताया कि तीन अलग तरह की टेस्ट हैं, और बुद्धिमत्ता की डिजाईन इन सब प्रभावी तरीके से जांची जा सकती है/ याने ये टेस्टेबलिटी की मांग पूरी करती है/ इसलिए हर कारण है कि इसे साइंटिफिक थेयरी रूप में माना जाए/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: ठीक है, और बड़ी बात है कि लोग कहते हैं, कि बुद्धिमत्ता की डिजाईन तो आस्था का विज्ञान को ढ़ाक देना है/

डॉक्टर स्टीफन मायर:: सही है, मैं सोचता हूँ कि ये विचार कि बुद्धिमत्ता की डिजाईन आस्था है विज्ञान नही, गडबडी लाता है बुद्धिमत्ता की डिजाईन की बुनियाद में, इस थेयरी के संभव उपयोग में/ और बुद्धिमत्ता की डिजाईन की बुनियाद तो वैज्ञानिक सबूत हैं जिसे हम देख रहे हैं, फोसिल्स रिकॉड में अचानक बहुत से जानवरों का प्रकट होना/ सबूत है कि जानकारी डी एन ए मॉलिक्यूल में रखी गई हैं, और बहुत से सबूत हैं, जिसके बारे में मैंने अपनी किताब में बताया है/ याने इस थेयरी की बुनियाद सबूतों के साथ हैं, ये स्वाभाविक संसार का सबूत है, और साथ ही साइंटिफिक रिजनिग के स्टैण्डर्ड मेथड का ऊपयोग हुआ है/ ये वही तरीका है जिसका डारविन ने उपयोग किया था/

याने ये थेयरी आधारित है साइंटिफिक रिजनिग के स्टैण्डर्ड मैथड पर, और स्वाभाविक संसार के निश्चित सबूतों पर आधारित है, इसलिए इसमें साइंटिफिक बुनियाद है/ इसमें शायद बड़ा संसारिक दृष्टिकोण है, या फिलोसोफीकल, या धार्मिक उपयोगी बातें हो, लेकिन फिर कहूँ डारविनिजम में भी है/ डारविनिजम में बहुत इम्प्लीकेशन हैं कि मटेरियलीस्टिक वर्ल्डव्यू के लिए/ जिसे डारविनिजम को सपोर्ट करनेवालों ने देखा है/

और बुद्धिमत्ता की डिजाईन की थेयरी, शायद इसमें भी बड़ा वर्ल्डव्यू है या फिलोसोफीकल और धार्मिक इम्प्लीकेशन हैं, यदि आप जिन्दगी के इतिहास में बुद्धिमत्ता की डिजाईन के सबूतों को देखते हैं, इस में वी भी है जो अस्थिक धार्मिक लोग कहते हैं, वो बताते हैं कि एक बनानेवाला है, उसने हमारे आस-पास जो जिन्दगी देखते हैं उसने उसे बनाया है, और वो कहते हैं कि वो तो परमेश्वर है/ खैर बुद्धिमत्ता की डिजाईन ने परमेश्वर के अस्तित्व को साबित कर नही दिखाया है/ ये साबित करती है श्रद्धा की आस्था को/ जो कहता है हाँ एक बनानेवाला मन था/ और वो मन परमेश्वर है, याने हम कह सकते हैं कि बुद्धिमत्ता की डिजाईन के इम्पलीकेशन हैं जो आस्था के साथ के हैं, ये उस विचार के साथ मिलते हैं जो यहूदी और मसीही और दुसरे लोग परमेश्वर के बारे में जो सोचते हैं उससे/ इसका ये अर्थ नही कि ये थेयरी आस्था पर आधारित है/ लेकिन इसमें ऐसे इम्प्लीकेशन हैं जो धार्मिक विश्वास से मिलते हैं/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, इस के बारे में बताइए, वो वचन जो कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी के द्वार पर था, भजन 111

डॉक्टर स्टीफन मायर:: जी, मैंने बुद्धिमत्ता की डिजाईन के पब्लिक डिस्कशन में स्पष्ट की है, बुद्धिमत्ता की डिजाईन साइंटिफिक सबूतों पर आधारित है/ रीजर्निंग के साइंटिफिक मेथड पर, और इसके बहुत से इम्प्लीकेशन हैं जो विश्वास के मिलते हैं/ मैं भी विश्वास का व्यक्ति हूँ, मैं मसीही हूँ, और मैंने एक प्रेरणादायक बात पाई है, जब मैं कैम्ब्रीज में अपनी पी एच डी कर रहा था, वहाँ एक वचन था जो कैवेंडिश लेबोरेटरी के द्वार पर लगा था/ जो 19 वी सदी के विख्यात फिजिसिस्ट जेम्स क्लार्क मैक्सवेल ने लगाया था, मैं सोचता हूँ कि ये विज्ञान के इतिहास में तीन महान लोगों में से एक हैं, और मैक्सवेल समर्पित विश्वसी थे/ जो चाहते थे कि विज्ञान के लिए प्रेरणा सबके सामने घोषित की जाए/ और उन्होंने कैवेंडिश लेबोरेटरी के द्वार पर एक वचन लगाया था, उनका दृष्टिकोण था जो भजन 111 से है, जो कहता है, यहोवा के काम बड़े हैं, जितने उससे प्रसन्न रहते हैं, वे उन पर ध्यान लगाते हैं/ उनके लिए ये प्रेरणा थी, विज्ञान को पढ़ने के, वो विश्वास करते थे कि ये स्वाभाविक संसार परमेश्वर ने बनाया है, और मनुष्य के मन को समझने के लिए बुद्धिमत्ता बनाई है/ क्योंकि

परमेश्वर सृष्टिकर्ता है और उसने हमारे मन को बनाया कि हम उस लॉजिक और डिजाईन को समझ सके जो उसने सृष्टि में बनाई है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, मुझे ये अगली बात पसंद है, उसने अपने आशचर्य कर्मों का स्मरण कराया है/ इसका क्या अर्थ है?

डॉक्टर स्टीफन मायर:: जी, जब मैं अपनी किताब पर साइन करता हूँ, जब लोग सिगनिचर मांगते हैं, तो अकसर ये वचन भाग लिखता हूँ भजन 111:4 जो कहते है, उसने अपने आश्चर्य कर्मों को स्मरण कराया है, और फिर कहू ये व्यक्तिगत विश्वास है, ये प्रेरणा देता है क्योंकि मैं सोचता हूँ कि हम जो देख रहे हैं, फोसिल्स के बचाए रखने में, डी एन ए मॉलिक्यूल की खोज में,कॉस्मिक बैकग्राउंड रेडिएशन में, जो संसार की शुरू के इको से आते हैं, मैं सोचता हूँ कि हम निर्देश देख रहे हैं, इस डिज़ाइनर के काम को, जिसने हमारा संसार बनाया है, और हम इन इंडिकेशन की खोज काफी समय बात भी कर रहे हैं, हम जिन घटनाओं का अध्यन कर रहे हैं मैं सोचता हूँ कि ये उत्साहित करता है/ और ये दिलचस्प भजनकार है उसने बताया कि इस तरह की बातें संभव हो सकती हैं, कि परमेश्वर के आश्चर्यकर्म स्मरण किए जाए/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, मुझे पसंद है, मैं चाहता हूँ कि आप प्रोस्ताहित करनेवाले शब्दों को कहे, विद्यार्थियों को, जो पढ़ रहे हैं स्कुल में, ग्रैड स्कुल में, पी एच डी, और वो परेशान हैं, क्योंकि उन्हें एक तरफ बताया गया, कि कैसे इवोल्यूशन उनके विश्वास पर असर डालता है, और अब वो ये जानकारी पाते हैं, आप याद कर सकते हैं कि इन बातों से लड़ रहे थे, आप उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए क्या कहेगे, उनकी अगुवाई करने के लिए सबूत जो उन्हें ले जाते हैं उसके दृष्टिकोण में/

डॉक्टर स्टीफन मायर:: जी, मैं जवान वैज्ञानिकों के साथ बहुत चर्चा करता हूँ, ग्रैड विद्यार्थीयों से, अंडर ग्रेजुएट से, और यदि वो डारविनिजम में दोष निकालते हैं, और यदि उनमें धार्मिक विश्वास है या किसी तरह के विश्वास रखते हैं यहूदी या मसीही, वो हमेशा सोचते हैं कि विज्ञानं की क्लास में अजीबसा आदमी है, बहुत से प्रोफेसर नैचरीलिस्ट या मटेरियलिस्ट दृष्टिकोण रखते हैं, प्रोफेसर हमेशा सोचते हैं, वो खुलकर कहते हैं कि विज्ञान इस संसार के दृष्टिकोण की सहायता लेते हैं, या बहुत से लोग खुले रूप में नास्तिक होते हैं, जैसे कहिए कि रिचर्ड डॉकीन्स विश्वास करते हैं कि विज्ञान तो नास्तिकवाद की सहमती में खड़े खड़े होते हैं, तो विद्यार्थी क्लास में प्रोफेसर के साथ किसी तरह के नास्तिक विश्वास का इनकार करते हैं, अकसर वो दबाए जाना महसूस करते हैं, उन्हें लगता है कि उन्हें कोई मेमो नही मिला है/

और मैं सोचता हूँ कि सच में, जब कि ये विज्ञान में अद्भुत समय है, यदि हम बड़े सवालों में दिलचस्पी लेते हैं, और खासकर यदि हम आस्था का दृष्टिकोण कहते हैं, क्योंकि मैं सोचता हूँ कि हम डिजाईन के सबूत देख रहे हैं केवल बायोलॉजी में ही नही, लेकिन साथ ही फिजिक्स और कोस्मोलोजी में, और मैं सोचता हूँ कि हमें उल्टा दृष्टिकोण मिलता है, जानते हैं, विज्ञान के पोपुलायज़ेर इस तरह से कहेगे, जानते हैं विज्ञान नए नास्तिकता से सहमत है, या विज्ञान परमेश्वर में विश्वास को असाध्य बनाता है, या इस तरह की बात, लेकिन जब हम सबूत देखते हैं, मैं सोचता हूँ कि बुद्धिमत्ता की डिजाईन के लिए सामर्थी केस होती है/ और मैं व्यक्तिगत रूप में सोचता हूँ कि सबूत केवल बनानेवाले की ओर ही नही बताते हैं, लेकिन ये सामर्थी केस बना सकते हैं बायोलॉजी के सबूतों से, और साथ ही फिजिक्स और कॉस्मोलोजी में, उस डिज़ाइनर के लिए जिसमे यही गुण हैं, वही गुण जिसके बारे में यहूदी और मसीही लोग परमेश्वर के गुण कहते हैं/

बायोलॉजी से हम बुद्धिमत्ता की डिजाईन के सबूत देखते हैं, जो जिन्दगी के इतिहास में काम करते हैं, फिजिक्स से हम देखते हैं जिसे फिने ट्यूनिंग एलेमेंट्स कहते हैं, सबूत हैं संसार के शुरू होने के समय से लेकर, और

कॉस्मोलोजी में मैं सबूत देखता हूँ संसार के निश्चित शुरुवात के, तो जरूरत बताती है इस तरह के ट्रान्सेन्डनट फॉर्म ऑफ़ कॉजेशन की, जो पदार्थ, जगह, समय और शक्ति से परे हैं/ मैं सोचता हूँ कि जब हम इन सब को जोड़ते हैं तो आस्था की बड़ी केस बनती है, और हमने इस पर इंटरव्यू की पिछली सिरीज़ में चर्चा की हैं/ जहां मैंने विवरण के साथ इस केस को बताया था/

तो मैं सोचता हूँ कि विज्ञान को सही तरह से समझने के लिए विश्वास को कम करना नही लेकिन सोचता हूँ कि ये विश्वास के लिए सबूत देता है/ शायद लॉजिकली निश्चित रूप में किसी तरह से नही, लेकिन मैं सोचता हूँ कि ये मजबूत सबूत हैं जो अस्थिक विश्वास के साथ मिलता है/ तो मैं सोचता हूँ कि अच्छा समय है कि विश्वास के व्यक्ति हो और ऐसे व्यक्ति जो नैचरल वर्ल्ड में दिलचस्पी लेता है/

तो मैं सच में प्रोत्साहित हूँ कि विज्ञान में जाऊं और साथ ही बहस का दूसरा भाग भी देख लूँ/ जानते हैं यूनिवर्सिटी पर अभी भी अधिकार हो रहा है, ऐसे प्रोफेसर की क्लास से जो खासकर नैचरीलिस्टिक या मटेरियलिस्टिक विचारधारा रखते हैं/ लेकिन ऐसे बहुत से अच्छे वैज्ञानिक हैं और विज्ञान के फिलोसोफोर हैं जो इन सवालों को देख रहे हैं, अलग तरह से और केस बना रहे हैं कि विज्ञान को और भी अस्थिक रूप में समझते जाए, तो इसमें चले जाए, इन सवालों का जवाब देना अच्छा लगा/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, डॉ. मायर इस प्रोग्राम का अंत ये कहते हुए करूंगा, आपका व्यक्तिगत रूप में धन्यवाद, कि आप सिआटल से यहाँ आए,और हमारे साथ ये प्रोग्राम किए, उस सारे समय के लिए जो आपने अध्यन किया, आपने ये बड़ी किताबें लिखी जिसने प्रभाव डाला, पूरे संसार के वैज्ञानिकों पर, और मैं सराहना करता हूँ कि आप यहाँ आए और ये विचार हमारे दर्शकों के साथ बांटा/

****

हमारे टीवी प्रोग्राम देखने के लिए मुफ्त में डाऊनलोड कीजिए जॉन एन्करबर्ग ाो एप

"घ्द्धठ्ठन्र् द्यदृ ठ्ठड़ड़ड्ढद्रद्य ख्ड्ढद्मद्धद्म क्ण्द्धत्द्मद्य" ऋ ख्ऋड्ढद्मण्दृध्र्.दृद्धढ़

@JAshow.org

क्दृद्रन्द्धत्ढ़ण्द्य 2015 ऋड्ढन्ड्ढक्ष्